तुलनात्मक व्याख्या अथवा उपागम का प्रयोग
(USE OF COMPARATIVE ANALYSIS)

लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों में तुलनात्मक व्याख्या का किसी-न-किसी रूप में प्रयोग किया जाता है। समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र में तो काफी समय से तुलनात्मक व्याख्या को सर्वोत्तम व्याख्या समझा जाता है। इसका विकास ऐतिहासिक एवं उद्‌विकासवादी परिप्रेक्ष्यों में पाई जाने वाली कमियों को दूर करने के प्रयास के परिणामस्वरूप हुआ। इस व्याख्या को अप्रत्यक्ष प्रयोगात्मक व्याख्या भी कहा जाता है। वास्तव में, **दुर्खीम** (Durkheim) ने इसे अप्रत्यक्ष प्रयोगात्मक पद्धति ही कहा है। वह पहले समाजशास्त्री हैं जिन्होंने इस व्याख्या का विधिवत् प्रयोग अपने आत्महत्या के अध्ययन में किया। **टी० बी० बॉटोमोर** (T. B. Bottomore) का कहना है कि यद्यपि सर्वप्रथम विकासवादी समाजशास्त्रियों ने इस विधि का प्रयोग किया, परन्तु दुर्खीम पहले विद्वान् हैं जिन्होंने केवल इसकी महत्ता पर ही प्रकाश नहीं डाला है, अपितु इस व्याख्या का प्रयोग अपने तीसरे प्रसिद्ध ग्रन्थ *आत्महत्या (The Suicide)* में किया भी है।

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक *समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम (The Rules of Sociological Method)* में यह दावा करने के बाद कि समाजशास्त्रीय स्पष्टीकरण (व्याख्या) पूर्ण रूप से कारणवाद के सम्बन्धों को स्थापित करने, एक घटना को उसके कारण से सम्बन्धित करने अथवा कारण को कार्य से सम्बन्धित करने का एक मामला है, इस बात पर बल दिया है कि प्रदत्त घटना किसी अन्य घटना का कारण है, इसे जानने के लिए हमारे पास एक उपाय है। वह उपाय है उन मामलों की तुलना करना जिनमें वे एक ही समय में उपस्थित अथवा अनुपस्थित हैं अर्थात् यह देखना कि क्या परिस्थिति के भिन्न संयोगों में उनके द्वारा प्रस्तुत भिन्नताएँ यह संकेत करती हैं कि वे एक-दूसरे पर निर्भर हैं। जब वे कृत्रिम रूप से प्रत्येक की इच्छा से उत्पन्न किए जा सकते हैं तो यह पद्धति प्रयोगात्मक कही जाती है। जब इसके विपरीत, इन तथ्यों को उत्पन्न करना हमारे नियन्त्रण में नहीं होता है तथा हम मात्र उन्हें इस प्रकार एक-दूसरे के निकट ला सकते हैं जैसे वे स्वेच्छानुसार उत्पन्न हुए हैं, तो इसमें प्रयुक्त पद्धति अप्रत्यक्ष प्रयोग या तुलनात्मक पद्धति (विधि) कही जा सकती है।

सरल शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग कार्य-कारण सम्बन्धों का पता लगाने के लिए किया जाता है। सामान्यत: प्राकृतिक विज्ञानों में कार्य-कारण सम्बन्धों का पता प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक पद्धति द्वारा प्रयोगशाला में लगाया जाता है। परन्तु, क्योंकि समाजशास्त्र में प्रत्यक्ष प्रयोग सम्भव नहीं है अत: इसमें तुलनात्मक व्याख्या की सहायता ली जाती है तथा इसीलिए इसे 'व्याख्या, अप्रत्यक्ष प्रयोगात्मक पद्धति, विधि या परिप्रेक्ष्य' का नाम भी दिया जाता है।

तुलनात्मक व्याख्या का अर्थ
(Meaning of Comparative Analysis)

तुलनात्मक व्याख्या वह पद्धति है जिसमें किन्हीं दो घटनाओं, संस्थाओं तथा समाजों आदि की तुलना करके उनमें अन्तर तथा समानता का पता लगाया जाता है तथा फिर इन भिन्नताओं अथवा समानताओं के आधार पर घटनाओं, संस्थाओं तथा समाजों की व्याख्या की जाती है। प्रत्येक तुलना तुलनात्मक विधि नहीं है क्योंकि **जिन्सबर्ग** (Ginsberg) के अनुसार तुलनात्मक व्याख्या का अर्थ केवल तुलना करना ही नहीं है, अपितु तुलना के पश्चात् घटनाओं की व्याख्या करना भी है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि तुलना करके तुलना की जाने वाली घटनाओं की व्याख्या नहीं की जाती, तो इसे तुलनात्मक व्याख्या नहीं कहा जाएगा। साथ ही, **दुर्खीम** का कहना है कि तुलना की जाने वाली वस्तुएँ पूर्णत: एक-दूसरे से भिन्न नहीं होनी चाहिए। उनका यह कहना था कि तुलना की जाने वाली वस्तुओं में कुछ-न-कुछ समानता होनी अनिवार्य है। उदाहरण के लिए—हम आज के भारत की तुलना आज के अमेरिका से नहीं कर सकते क्योंकि इन दोनों में कोई समानता नहीं है। हम आज के भारत की तुलना आज से साठ वर्ष पहले अमेरिका से कर सकते हैं। दुर्खीम का कहना है कि प्रत्येक तुलना तुलनात्मक व्याख्या नहीं है क्योंकि तुलना के लिए किसी एकाकी अथवा अनूठे समाज से प्राप्त किए गए, एक ही जाति के विभिन्न समाजों से अथवा बहुत से विभिन्न सामाजिक जातियों से लिए गए तथ्यों का होना जरूरी है। तुलनात्मक व्याख्या का अभिप्राय केवल तुलना करके अन्तर अथवा समानता निकालना नहीं है, अपितु इनके आधार पर तुलना की जाने वाली घटनाओं की व्याख्या करना भी है।

डंकन मिशेल (Duncan Mitchell) ने **समाजशास्त्रीय शब्दकोश** में तुलनात्मक व्याख्या के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि तुलनात्मक व्याख्या उस पद्धति को कहते हैं जिसमें भिन्न-भिन्न समाजों अथवा एक ही समाज के भिन्न-भिन्न समूहों की तुलना करके यह बताया जा सके कि उनमें समानता है अथवा नहीं, और यदि है तो क्यों है?

तुलनात्मक व्याख्या की यह प्रमुख मान्यता है कि समाज अथवा सामाजिक व्यवस्था को पूरी तरह से तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक कि इनकी तुलना अन्य समाजों अथवा व्यवस्थाओं से न की जाए। इस दृष्टि से निहित अर्थ में समाजशास्त्र तुलनात्मक है क्योंकि सामाजिक घटनाएँ अनिवार्य रूप में किसी-न-किसी प्रकार से विशिष्ट, प्रतिनिधिपूर्ण अथवा अनुपम (Typical, representative or unique) होती है तथा इस नाते इनमें समुचित तुलना अन्तर्निहित होती है। इसीलिए **दुर्खीम** का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' किसी भी दृष्टि से समाजशास्त्र की शाखा न होकर तब तक स्वयं समाजशास्त्र है जब तक यह विशुद्ध रूप से वर्णनात्मक न होकर तथ्यों को समझने की आकांक्षा रखता है।

सभी प्रयोगों में एक परिस्थिति में होने वाले घटनाक्रम (नियन्त्रित समूह) की तुलना दूसरी परिस्थिति में होने वाले घटनाक्रम (प्रयोगात्मक समूह) से की जाती है। चूँकि सामाजिक घटनाओं को प्रयोगशालाओं में उनके विस्तार एवं समयक्रम के कारण दोहराया नहीं जा सकता, इसलिए समाजशास्त्र में प्रयोगों की महत्ता अपेक्षाकृत सीमित ही है। इस कठिनाई को दूर करने हेतु ही समाजशास्त्र में तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया जाने लगा है। बहुत से विद्वान् इस व्याख्या को 'वास्तविक' प्रयोग मानने से संकोच नही करते हैं। समाजशास्त्री विभिन्न समाजों अथवा सामाजिक सन्दर्भों की यथार्थता से सम्बन्धित प्रमाण संकलित करते हैं तथा फिर उनकी तुलना से उनमें पाई जाने वाली समानताओं एवं असमानताओं का पता लगाने का प्रयास करते हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि इस व्याख्या में कोई परिस्थिति निर्मित नहीं की जाती अपितु वह पहले से ही विद्यमान होती है। इसलिए यह व्याख्या यथार्थता को समझने में अधिक उपयोगी माना जाता है।

अनेक प्रारम्भिक समाजशास्त्रियों—यथा कॉम्ट—ने विभिन्न समाजों की तुलना इस तथ्य की पुष्टि करने हेतु की कि उनका उद्विकास एक-समान रूप में हो रहा था। इसी दृष्टि से कॉम्ट ने सामाजिक विकास का 'त्रिस्तरीय नियम' का प्रतिपादन किया जिसमें उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि सभी समाज अनिवार्य रूप से विकास की तीन अवस्थाओं में से होकर गुजरते हैं। उनका यह निष्कर्ष विविध प्रकार के समाजों के इतिहास के अध्ययन पर आधारित था। मार्क्स ने भी अपने सिद्धान्त में तुलनात्मक सामग्री का प्रयोग यह प्रमाणित करने के लिए किया कि सभी समाजों का इतिहास प्रारम्भिक साम्यवाद से उत्तर-क्रान्तिकारी साम्यवाद की ओर बढ़ने का इतिहास है। दुर्खीम ने आत्महत्या की व्याख्या हेतु तुलनात्मक सामग्री का प्रयोग किया, जबकि वेबर ने पूँजीवाद के विकास के अपने अध्ययन में विभिन्न धर्मों के बारे में तुलनात्मक सामग्री संकलित की। स्पष्ट है कि समाजशास्त्र में प्रारम्भ से ही तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग होता रहा है तथा इसकी महत्ता आज भी निरन्तर बनी हुई है।

तुलनात्मक व्याख्या के प्रमुख लक्षण
(Salient Features of Comparative Analysis)

स्वेनसन (Swanson) ने उचित ही कहा है कि, ''तुलना के बिना सोचना अविचार्य है। इस भाँति, तुलना के अभाव वैज्ञानिक चिन्तन एवं वैज्ञानिक शोध के बारे में सोचा नहीं जा सकता है।''[9] लगभग इसी प्रकार के विचार **केसियर** (Cassirer) ने भी व्यक्त किए हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि विस्तृत अर्थ में तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य (पद्धति) सामाजिक वैज्ञानिक पद्धतिशास्त्र का सारभाग है। सांख्यिकीय प्रविधियाँ भी सम्बन्धित मामलों के सामूहिक तुलना पर आधारित होती है। इस अर्थ में सभी सामाजिक वैज्ञानिक व्याख्या अथवा पद्धतियाँ तुलनात्मक प्रकृति की होती हैं। यद्यपि यह काफी सीमा तक सही है, तथापि अभी तक परिशुद्ध तुलनात्मक पद्धतिशास्त्र (Rigorous comparative methodology) का विकास नहीं हुआ है। तुलना हेतु अपनाए जाने वाले सूचकांकों के विभिन्न समाजों एवं संस्कृतियों में समान अर्थ न होना इसमें आने वाली सबसे बड़ी कठिनाई मानी जाती है।

जो समाजशास्त्रीय अनुसन्धान वर्णनात्मक अध्ययनों तक ही सीमित नहीं होते हैं, उनमें तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य आधारभूत रूप में प्रयोग किया जाता है। जो कोई समाजशास्त्री सामाजिक घटनाओं एवं व्यवहार के कारणों को ढूँढने का प्रयास कर रहा है, वह किसी-न-किसी रूप में तुलनाओं का अवश्य प्रयोग करता है।

कारणों से सम्बन्धित व्याख्याओं में दो परिस्थितियों की तुलना निहित होती है—एक वह परिस्थिति जिसमें व्याख्या की जाने वाली कोई चीज विद्यमान है तथा दूसरी वह परिस्थिति जिसमें वह विद्यमान नहीं है।

सामाजिक विज्ञानों में प्रयुक्त तुलनात्मक व्याख्या का सार अथवा प्रमुख लक्षण निम्न प्रकार हैं—

(1) तुलनात्मक व्याख्या पद्धतिशास्त्र का एक अंग है। यह एक विशेष प्रकार की पद्धति है जो अध्ययनकर्ता को तुलना द्वारा किसी भी घटना को समझने में सहायता प्रदान करती है। अत: इसका सर्वप्रथम लक्षण यह है कि इसमें घटना की व्याख्या हेतु तुलना को प्राथमिकता दी जाती है।

(2) तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग दो सामाजिक घटनाओं अथवा परिस्थितियों की तुलना करके उनमें अन्तर अथवा समानता का पता लगा कर इसके आधार पर सम्बन्धित घटनाओं अथवा परिस्थितियों की व्याख्या करना है। अत: तुलनात्मक व्याख्या का उद्देश्य केवल तुलना करना ही नहीं है, अपितु इसके आधार पर जिन असमानताओं अथवा समानताओं का पता चलता है उनका प्रयोग व्याख्या हेतु करना है।

(3) तुलनात्मक व्याख्या की एक प्रमुख मान्यता यह है कि किसी भी समाज अथवा किसी भी प्रकार की व्यवस्था को तब तक पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता, जब तक कि इनकी तुलना अन्य समाजों अथवा व्यवस्थाओं से न की जाए।

(4) तुलनात्मक व्याख्या किसी एकाकी तथा अनूठे समाज की विभिन्न इकाइयों (समिति, समूह, संस्था इत्यादि) अथवा एक ही जाति के विभिन्न समाजों अर्थात् एक समान स्तर वाले समाजों की तुलना पर बल देता है।

(5) तुलनात्मक व्याख्या दो विभिन्न समाजों अथवा संस्कृतियों में किसी विशेष घटना की तुलना कर उसे समझने पर बल देता है।

(6) तुलनात्मक व्याख्या दो घटनाओं में कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना पर बल देता है। इसीलिए इसे सामान्यीकरण करने में सहायक माना जाता है। कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना के आधार पर यह व्याख्या पूर्वानुमान लगाने अथवा भविष्यवाणी करने में भी सहायक है। उदाहरणार्थ, यदि परिवारों की बाल अपराध में भूमिका हेतु विभिन्न प्रकार के परिवारों की तुलना करने पर यह पता चल जाए कि भग्न परिवार (Broken home) बाल अपराध के लिए उत्तरदायी है, तो यह भविष्यवाणी की सकती है कि जैसे-जैसे भग्न परिवारों की संख्या में वृद्धि होगी, वैसे-वैसे बाल अपराध की दर भी बढ़ेगी। इसी भाँति, यदि सामाजिक गतिशीलता एवं संयुक्त परिवारों के एकाकी परिवार में रूपान्तरण में कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित हो जाए, तो यह पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि से संयुक्त परिवार बड़ी संख्या में एकाकी परिवारों में परिवर्तित होने लगेंगे।

(7) तुलनात्मक व्याख्या में तुलना हेतु अनेक सूचकांकों का प्रयोग किया जाता है। सर्वाधिक प्रयोग संस्कृति, राष्ट्र, वर्ग एवं जेण्डर जैसे सूचकांकों का होता है क्योंकि इनके आधार पर की जाने वाली तुलना सरल एवं विश्वसनीय मानी जाती है।

(8) तुलनात्मक व्याख्या एक ऐसा व्याख्या है जो अपने समाज को भी समझने में सहायता प्रदान करता है। ऐसा माना जाता है कि यदि हम अपने समाज की संस्थाओं को अन्य समाजों की संस्थाओं के सन्दर्भ में देखेंगे, तो अपनी संस्थाएँ अधिक समझ में आएँगी। इसी मान्यता के आधार पर बाहरी समाजों के क्षेत्रीय अध्ययनों (Area studies) पर बल दिया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता कि तुलनात्मक व्याख्या का उद्देश्य मात्र तुलना करना नहीं है अपितु तुलना करके पहले अन्तर एवं समानताओं का पता लगाना तथा फिर इनके आधार पर घटनाओं की व्याख्या करना भी है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक व्याख्या में दो घटनाओं, परिस्थितियों, संस्थाओं अथवा समाजों इत्यादि की तुलना की जाती है। तुलना के पश्चात् जो अन्तर एवं समानताएँ दिखाई देती हैं उनके आधार पर घटनाओं एवं परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया जाता है। दुर्खीम तथा मिशेल के विचारों से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि प्रत्येक तुलना तुलनात्मक व्याख्या नहीं है, अपितु तीन ऐसी परिस्थितियाँ हैं जिनकी तुलना की जा सकती है। ये परिस्थितियाँ निम्नांकित हैं—

(1) किसी एकाकी तथा अनूठे समाज की विभिन्न इकाइयों (समिति, समूह, संस्था इत्यादि) की तुलना;

(2) एक जाति के विभिन्न समाजों अर्थात् एक समान स्तर वाले समाजों की तुलना तथा

(3) एक ही घटना की विभिन्न समाजों में तुलना।

तुलनात्मक व्याख्या के उदाहरण
(Examples of Comparative Analysis)

समाजशास्त्र में दुर्खीम (Durkheim), वेबर (Weber) तथा मानवशास्त्र में रैडक्लिफ- ब्राउन (Radcliffe-Brown), फ्रेजर (Frazer), बोआस (Boas) तथा हैड्डन (Haddon) के नाम तुलनात्मक व्याख्या के सन्दर्भ में उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों द्वारा तुलनात्मक व्याख्या के प्रयोग को संक्षेप में निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता हैं—

(1) इमाइल दुर्खीम (Emile Durkheim)—दुर्खीम ने अपनी पुस्तक *समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम* (1895) में केवल समाजशास्त्रीय प्रमाणों की स्थापना से सम्बन्धित नियमों का ही उल्लेख नहीं किया है अपितु अप्रत्यक्ष प्रयोग अर्थात् तुलनात्मक विधि को अपने आत्महत्या के अध्ययन में अपनाया भी है। दुर्खीम अपनी तीसरी पुस्तक *आत्महत्या (The Suicide)* में यह प्रश्न नहीं उठाते कि कोई व्यक्ति आत्महत्या क्यों करता है? अपितु यह प्रश्न अपने सामने रखते हैं कि विभिन्न समाजों में आत्महत्या की दर में अन्तर क्यों है? हम जानते हैं कि आत्महत्या एक व्यक्तिगत क्रिया है जिसका प्रभाव केवल व्यक्ति पर ही पड़ता है। इसलिए व्यक्तिगत कारकों के कारण इसका अध्ययन मनोविज्ञान में किया जाना चाहिए, परन्तु समाजशास्त्रियों की आत्महत्या के अध्ययन में रुचि दूसरे दृष्टिकोण के कारण है। समाजशास्त्र आत्महत्या के सामाजिक कारणों, इन कारणों की प्रकृति तथा आत्महत्या के सामान्य तत्त्वों के आधार पर विभिन्न समाजों अथवा एक ही समाज के भिन्न समूहों में आत्महत्या की दर में अन्तर समझा सकते हैं।

आत्महत्या, जोकि व्यक्तिगत स्वभाव, प्रकृति तथा इतिहास से सम्बन्धित है, समाजशास्त्रियों की रुचि का विषय क्यों है? क्यों न इसे मनोविज्ञान में अध्ययन के लिए छोड़ दिया जाए? इन प्रश्नों का स्पष्ट शब्दों में उत्तर देते हुए दुर्खीम का कहना है कि जब किसी समाज में हुई आत्महत्या को समग्र के रूप में समझने का प्रयास किया जाता है तो परिणाम व्यक्तिगत इकाइयों का योग नहीं है अपितु एक नया तथ्य है जिसे सामाजिक तथ्य कहा जा सकता है। वास्तव में, आत्महत्या की दर अनेक समाजों में काफी समय तक एक-सी रहती है तथा जब इनमें परिवर्तन होता है तो इसका सम्बन्ध स्वयं समाजों में हुए परिवर्तनों से जोड़ा जा सकता है। यूरोप के ग्यारह देशों में मृत्यु दर अथवा जन्म दर काफी परिवर्तित होती रही है परन्तु आत्महत्या की दर एक जैसी बनी रही है।

दुर्खीम संकलित आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचते हैं—

(1) आत्महत्या की दरें प्रति वर्ष लगभग समान रहती हैं।

(2) आत्महत्या की दरें जाड़ों की अपेक्षा गर्मियों में अधिक (ऊँची) होती हैं।

(3) स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में आत्महत्याएँ अधिक पाई जाती हैं।

(4) बड़ों (Older) में छोटों (Younger) की अपेक्षा अधिक आत्महत्याएँ पाई जाती हैं।

(5) ग्रामीण समूहों की अपेक्षा नगरवासियों में आत्महत्याएँ अधिक घटित होती हैं।

(6) नागरिकों की तुलना में सैनिक अधिक आत्महत्या करते हैं।

(7) कैथोलिक मतावलम्बियों की अपेक्षा प्रोटेस्टैण्ट मतावलम्बी अधिक आत्महत्या करते हैं।

(8) विवाहितों की तुलना में अविवाहित, तलाक प्राप्त या विधवा/विधुर व्यक्तियों में आत्महत्या अधिक पाई जाती है।

(9) विवाहितों में भी उन व्यक्तियों में जो नि:सन्तान हैं, उनमें सन्तान वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक आत्महत्याएँ पाई जाती हैं।

दुर्खीम आत्महत्या के कारण निर्धनता, पारिवारिक कठिनाइयाँ, द्वेष इत्यादि न मानकर सामाजिक सामंजस्य (Social concomitants); जैसे धर्म, वैवाहिक स्तर, राजनीतिक प्राथमिकता तथा व्यावसायिक सम्बन्ध इत्यादि मानते हैं।

धर्म किस प्रकार आत्महत्या की दर को प्रभावित करता है? इसका उत्तर विभिन्न देशों से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर दिया जा सकता है। विभिन्न देशों के आँकड़ों के अवलोकन से कुछ समानताएँ दिखाई देती हैं; जैसे—रोमन कैथोलिक देशों में आत्महत्या की दर सबसे कम है, प्रोटेस्टैण्ट तथा कैथोलिक दोनों ही धर्म वाले देशों में इनसे अधिक तथा प्रोटेस्टैण्ट देशों में सबसे अधिक आत्महत्या की दर है। यद्यपि कैथोलिक तथा प्रोटेस्टैण्ट दोनों धर्म आत्महत्या की मनाही करते हैं फिर भी प्रोटेस्टैण्ट धर्म में अन्वेषण की अधिक स्वतन्त्रता है,

जबकि कैथोलिज्म में भाग्यवादिता पर अधिक विश्वास पाया जाता है। प्रोटेस्टैण्ट धर्म व्यक्ति को अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करता है और उदारवादी है। कैथोलिक धर्म अधिक रूढ़िवादी है। इसका अर्थ यह है कि प्रोटेस्टैण्ट सामाजिक संगठन में कैथोलिक संगठन की अपेक्षा सामान्य रूप से कम एकता है तथा व्यक्ति के समूह के साथ सम्बन्ध अधिक मजबूत नहीं हैं। इसलिए व्यक्ति को स्थायित्व तथा सहायता के लिए अधिकाधिक अपने साधनों का प्रयोग करना पड़ता है। इससे दुर्खीम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि कैथोलिक धर्म समुदाय में स्पष्टत: एकता ऐसा गुण है जो व्यक्तिगत जीवन का बचाव करती है तथा व्यक्ति को आत्महत्या से रोकती है। इसलिए कठोर धार्मिक बन्धनों वाले समाज का सामाजिक संगठन व्यक्ति को आत्महत्या से रोकता है।

(2) मैक्स बेबर (Max Weber)—बेबर ने अपनी पुस्तक 'द प्रोटेस्टैण्ट इथिक एण्ड द स्प्रिट ऑफ कैपिटलिज्म' में धर्म एवं पूँजीवाद में सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग किया है। पश्चिमी यूरोप में पूँजीवाद का विकास एक विशिष्ट अथवा अनुपम घटना है। वेबर ने इस प्रश्न पर विचार करना शुरू किया कि पूँजीवाद का विकास केवल पश्चिमी समाजों में ही क्यों हुआ अन्य समाजों में क्यों नहीं, जबकि वहाँ की परिस्थितियाँ भी पश्चिमी देशों के समान ही थीं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए वेबर ने विभिन्न समाजों की तुलना की तथा यह पाया कि यद्यपि परिस्थितियाँ कुछ गैर-पश्चिमी समाजों में भी ऐसी थीं कि पूँजीवाद विकसित हो सकता था, परन्तु वास्तव में नहीं हुआ क्योंकि उन समाजों तथा पश्चिमी समाजों के धार्मिक आचारों में भिन्नता थी। पश्चिमी देशों में धार्मिक आचार ऐसे हैं कि उनका आर्थिक जीवन पर भी काफी प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार, वेबर का यह अध्ययन तुलनात्मक व्याख्या पर आधारित है।

वेबर ने 'प्रोटेस्टैण्ट इथिक' का आदर्श-प्रारूप (Ideal-type) बनाकर अन्य धर्मों से इसकी तुलना करके यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रोटेस्टैण्ट इथिक मानने वाले लोगों के व्यवहार के नियम आर्थिक विकास से जुड़े हुए हैं। कौन से विचार अथवा मूल्य पूँजीवाद की आत्मा को विकसित करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए वेबर ने प्रोटेस्टैण्ट समूहों; जैसे केलविनिस्ट (Calvinist), प्रीटिस्ट (Pretist), मैथोडिस्ट (Methodist), बेपटिस्ट (Bapatist) इत्यादि का अध्ययन करके इनके आधारभूत उपदेशों तथा शिक्षाओं का पता लगाया।

इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा हॉलैण्ड इत्यादि देशों में पूँजीवाद का सर्वोत्तम विकास हुआ क्योंकि इन देशों में अधिकतर प्रोटेस्टैण्ट धर्म के अनुयायी ही रहते हैं। दूसरी ओर इटली ओर स्पेन जैसे देशों में पूँजीवाद अधिक विकसित नहीं हो पाया क्योंकि वहाँ अधिकांश लोग कैथोलिक धर्म के अनुयायी हैं जिनकी मान्यताएँ प्रोटेस्टैण्ट इथिक से पूर्णत: भिन्न हैं। उनका कहना है कि कुछ गैर-पश्चिमी देशों (जैसे चीन और भारत) में परिस्थितियाँ तो ऐसी थीं की पूँजीवाद का विकास हो सकता था, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं हुआ क्योंकि इन देशों में भी भिन्न प्रकार का इथिक पाया जाता है जिसके परिणाम आर्थिक नहीं हैं।

(3) ए० आर० रैडक्लिफ-ब्राउन (A. R. Radcliffe-Brown)—तुलनात्मक व्याख्या का सबसे अधिक प्रयोग मानवशास्त्रीय अध्ययनों में किया गया है। रैडक्लिफ-ब्राउन ने अपने सभी अध्ययनों में इस परिप्रेक्ष्य की महत्ता पर प्रकाश डाला है तथा यहाँ तक कि सामाजिक मानवशास्त्र को 'तुलनात्मक समाजशास्त्र' (Comparative sociology) की संज्ञा दी है। अपने अफ्रीकी नातेदारी तथा आस्ट्रेलिया की जनजातियों के अध्ययनों में उन्होंने तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग किया है। अपने सम्पूर्ण शैक्षिक जीवन में रैडक्लिफ-ब्राउन ने तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य की महत्ता पर बल दिया है। वास्तव में, उनके अनुसार सामाजिक मानवशास्त्र एवं समाजशास्त्र में मूलभूत अन्तर यह है कि पहले में तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया जाता है, जबकि दूसरे में इसकी उपेक्षा की जाती है। इसी सन्दर्भ में वह सामाजिक मानवशास्त्र को उस परिस्थिति में समाजशास्त्र कहने को तत्पर थे जिसमें इसके आगे 'तुलनात्मक' शब्द जोड़ दिया जाए। यह केवल उनके कथन तक ही सीमित नहीं था, अपितु उन्होंने 1931 में आस्ट्रेलिया की जनजातियों के सामाजिक संगठनों के अध्ययन हेतु तुलनात्मक व्याख्या को अपनाया। हक्सले मेमोरियल व्याख्यान हेतु भी रैडक्लिफ-ब्राउन ने सामाजिक मानवशास्त्र में तुलनात्मक व्याख्या का ही चयन किया, जिसमें उन्होंने आस्ट्रेलिया की लोकगाथा के सामाजिक संरचना में संस्थागत विरोध तक की विस्तार से भूमिका स्पष्ट की। उनका विचार था कि तुलनाएँ दो उद्देश्यों की पूर्ति हेतु की जाती हैं जिनमें दो पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। हमें विविध प्रकार की संस्कृतियों की तुलना के आधार पर सार्वभौम नियमों के बारे में वैज्ञानिक सामान्यीकरण करने हेतु समकालिक और विषमकालिक तुलना पर गम्भीरता से सोच-विचार करना चाहिए। समकालिक अध्ययनों में हम किसी विशेष समय में विद्यमान संस्कृति

पर बल देते हैं, जबकि विषमकालिक अध्ययनों में दो विभिन्न कालों में संस्कृति की तुलना करने का प्रयास करते हैं।

(4) अन्य मानवशास्त्री (Other Anthropologists)—अनेक अन्य मानवशास्त्रियों ने भी अपने अध्ययनों में तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, **फ्रेजर** (Frazer) ने अपने अध्ययन गोल्डन बग (Golden Bough) में इस व्याख्या को अपनाया है। **बोआस** (Boas) ने इस परिप्रेक्ष्य को सामाजिक मानवशास्त्र का प्रमुख व्याख्या माना है। परन्तु उन्होंने इसे तथा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को एक साथ मिलाकर प्रयोग करने पर बल दिया है। पुस्तकालय में बैठकर सूचनाएँ संकलित करने के कारण कुछ लोग मानवशास्त्र में इस व्याख्या को 'आराम कुर्सी परिप्रेक्ष्य' (Arm-chair perspective) तथा इसके द्वारा अध्ययन करने वालों को 'आराम कुर्सी पर बैठे हुए मानवशास्त्री' भी कहा है। **हैड्डन** (Haddon) ने ऐसे विचारों का खण्डन किया है। उनका मत है कि यदि वास्तविक परिस्थितियों में रहकर तुलनात्मक अध्ययन किए जाएँ तो यह व्याख्या और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। साथ ही, मानवशास्त्र में कुछ विद्वानों ने तुलनाओं को अर्थपूर्ण बनाने हेतु काल्पनिक कथाओं की सहायता ली है जोकि उचित नहीं है।

तुलनात्मक व्याख्या की उपयोगिता
(Utility of Comparative Analysis)

तुलनात्मक व्याख्या समाजशास्त्र का एक प्रमुख परिप्रेक्ष्य माना जाता है। आज समाजशास्त्रीय एवं मानवशास्त्रीय अध्ययनों में इस व्याख्या का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इस परिप्रेक्ष्य की उपयोगिता निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत स्पष्ट की जा सकती है—

(1) नवीन उपकल्पनाओं का निर्माण (Formulation of new hypotheses)—तुलनात्मक व्याख्या द्वारा दो घटनाओं, समाजों या परिस्थितियों की तुलना की जाती है। तुलनात्मक परिस्थितियों को सामने रखकर अनुसन्धानकर्ता अनेक नवीन उपकल्पनाओं का निर्माण करता है। उदारहरण के लिए, यदि उसे लगता है कि दो समूहों में व्यक्तियों की आर्थिक या शैक्षिक स्थिति में भिन्नता के साथ-ही-साथ दोनों में अपराध की दर (Rate of crime) में भी अन्तर है, तो वह इन तथ्यों को सामने रखकर यह नवीन उपकल्पना निर्मित कर सकता है कि 'निम्न आर्थिक स्थिति अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है' अथवा 'निम्न शैक्षिक स्थिति अपराधी प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है' अथवा 'लोगों की आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति अपराध की दर से सम्बन्धित है'।

(2) उपकल्पनाओं का परीक्षण (Validation of hypotheses)—तुलनात्मक व्याख्या केवल नवीन उपकल्पनाओं के निर्माण में ही सहायक नहीं है, अपितु पुरानी उपकल्पनाओं का परीक्षण करने में भी उपयोगी है। रैडक्लिफ-ब्राउन का कहना है कि तुलनात्मक व्याख्या उपकल्पनाओं का परीक्षण करने का सबसे सरल उपाय है।

(3) विश्लेषणात्मक अध्ययन (Analytical studies)—तुलनात्मक व्याख्या में क्योंकि दो घटनाओं में कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना करने पर बल दिया जाता है, अत: यह केवल दो घटनाओं का वर्णन करने का ही परिप्रेक्ष्य न होकर घटनाओं के विश्लेषण में भी सहायक है। इसलिए इस व्याख्या को अन्य व्याख्याओं की तुलना में अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

(4) सामान्यीकरण (Generalizations)—तुलनात्मक व्याख्या दो घटनाओं में कार्य-कारण सम्बन्धों की स्थापना पर बल देता है। इसीलिए इसे सामान्यीकरण करने में सहायक माना जाता है। यदि कोई सामान्यीकरण सामान्य ज्ञान पर आधारित है, तो तुलनात्मक व्याख्या ऐसे सामान्यीकरण की पुष्टि करने में भी अत्यन्त उपयोगी पद्धति है।

(5) पूर्वानमुान में सहायक (Helpful in predictions)—तुलनात्मक व्याख्या द्वारा हमें भिन्न घटनाओं में केवल कार्य-कारण सम्बन्धों का ही पता नहीं चलता, अपितु उन घटनाओं का भी पता चल जाता है जिनकी पुनरावृत्ति होती रहती है। इससे हमें घटनाओं के बारे में पूर्वानुमान लगाने में सहायता मिलती है।

तुलनात्मक व्याख्या की सीमाएँ
(Limitations of Comparative Analysis)

तुलनात्मक व्याख्या समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र में अत्यधिक प्रचलित होने के बावजूद पूरी तरह से दोषरहित नहीं है। इसमें पाई जाने वाली प्रमुख सीमाओं को अग्रलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) उपकल्पनाओं का अभाव (Lack of hypotheses)—तुलनात्मक व्याख्या के प्रयोग हेतु उपकल्पनाओं का पूर्व-निर्माण अनिवार्य है। रैडक्लिफ-ब्राउन के मतानुसार उपकल्पना के अभाव में तुलनात्मक व्याख्या का प्रयोग करने में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती है।

(2) सम्पूर्ण सामाजिक संरचना की तुलना में कठिनाई (Difficulty in comparing total structure)—तुलनात्मक व्याख्या द्वारा समाज की विभिन्न संस्थाओं की तुलना तो सरलता से हो सकती है, परन्तु यह व्याख्या सम्पूर्ण समाजों, संस्कृतियों एवं संरचनाओं की तुलना में अधिक सहायक नहीं है।

(3) तुलनात्मक इकाइयों को पृथक् करने में कठिनाई (Difficulty in isolating comparable units)—तुलनात्मक व्याख्या में दो इकाइयों की तुलना की जाती है। समाज की प्रत्येक इकाई अन्य इकाइयों से जटिल रूप में सम्बन्धित होती है। अत: तुलना की जा रही इकाइयों या घटनाओं को एक-दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता और न ही अन्य इकाइयों या घटनाओं पर किसी प्रकार का नियन्त्रण ही रखा जा सकता है। इससे कई बार निकाले गए निष्कर्ष भ्रामक हो सकते हैं।

(4) सतही समरूपता (Superficial similarity)—कई बार तुलना की जाने वाली परिस्थितियों में सतही रूप से तो समानता दिखाई देती है, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत हो सकती है। अनेक विद्वानों का मत है कि सतही तौर पर जो समानता दिखाई देती है, हो सकता है कि वह वास्तव में विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न प्रकार की हो। उदाहरण के लिए, भारत में विवाह की संस्था की तुलना यदि हम पश्चिमी देशों की विवाह की संस्था से करें, तो अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं क्योंकि संस्था तो एक ही है परन्तु विवाह की मान्यताओं में भारत तथा पश्चिमी देशों में काफी अन्तर है।

(5) इकाइयों की परिभाषा में कठिनाई (Difficulty in defining units)—वैज्ञानिक अध्ययन हेतु अध्ययन की जाने वाली इकाइयों की परिभाषा देना अनिवार्य है। तुलनात्मक व्याख्या में तुलना की जाने वाली इकाइयों की परिभाषा देना कई बार कठिन हो जाता है क्योंकि इकाइयों का रूप देश एवं काल के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

(5) केवल एक कारकीय व्याख्या (One factor explanation only)—तुलनात्मक व्याख्या द्वारा दो घटनाओं में कार्य-कारण सम्बन्धों का पता लगाने का प्रयास किया जाता है। परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि एक घटना का एक ही कारण हो। वास्तव में, सामाजिक जगत में यह सम्भव नहीं है। सामाजिक घटनाओं के घटित होने के पीछे जरूरी नहीं है कि सदैव एक ही कारण हो। उदाहरणार्थ, बाल अपराध हेतु भग्न परिवार के उत्तरदायी होने का जो उदाहरण पीछे दिया गया है, उसमें हो सकता है कि सभी भग्न परिवार बाल अपराध को बढ़ावा न देते हों। इसके लिए केवल वही भग्न परिवार उत्तरदायी हो सकते हैं जो निर्धन है तथा जिसमें शिक्षा का अभाव पाया जाता है। अत: यह व्याख्या बहुकारकीय व्याख्या में सहायक नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि तुलनात्मक व्याख्या सामाजिक विज्ञानों में उपयोगी तो है, परन्तु इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। यदि इस व्याख्या को तुलना मात्र न मानकर, तुलना की जाने वाली इकाइयों के चयन में सावधानी रखी जाए, तो इस परिप्रेक्ष्य की अधिकांश सीमाओं को दूर किया जा सकता है।

चूँकि तुलनात्मक व्याख्या एक तार्किक पद्धति है, इसलिए यह एक गैर-सांख्यिकीय पद्धति है। इसका अर्थ यह है कि तुलनात्मक व्याख्या निदर्शनों एवं समग्रों से सम्बन्धित नहीं है, अपितु रुचि की घटना के सभी प्रासंगिक दृष्टान्तों (उदाहरणों) तक सीमित होता है। इतना ही नहीं, तुलनात्मक व्याख्या द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर जो व्याख्याएँ दी जाती हैं, वे सम्भावित व्याख्याएँ नहीं होतीं। इसके विपरीत ऐसी व्याख्याएँ निश्चित (सुस्पष्ट) व्याख्याएँ होती हैं क्योंकि इसमें किसी भी विशिष्ट घटना के प्रत्येक दृष्टान्त पर ध्यान दिया जाता है। इस सन्दर्भ में, **स्मेलसर** (Smelser) का मत है कि परिशुद्ध तुलनात्मक व्याख्या सम्भव नहीं है क्योंकि इसका प्रयोग उसी परिस्थिति में किया जा सकता हैं, जबकि सम्बन्धित इकाइयों की संख्या कम हो। साथ ही, यह बहुकारकीय व्याख्या में सहायक नहीं हैं। इसीलिए स्मेलसर ने यह तर्क दिया है कि तुलनात्मक व्याख्या, परिप्रेक्ष्य (पद्धति) सांख्यिकीय पद्धति की तुलना में निकृष्ट (निम्न स्तर की) है।[12] अनेक अन्य विद्वान् स्मेलसर के इस तर्क से सहमत नहीं है। उन्होंने तुलनात्मक व्याख्या (पद्धति) को सांख्यिकीय पद्धति से श्रेष्ठ माना है। इसके पक्ष में दिए जाने वाले निम्नलिखित चार प्रमुख तर्क हैं—

(1) सांख्यिकीय पद्धति समनुरूप (Configurational) नहीं होती, क्योंकि इसमें प्रत्येक दशा का परीक्षण योगशील ढंग (Additive manner) से किया जाता है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि

सांख्यिकीय पद्धति चरों पर आधारित होती है। तुलनात्मक व्याख्या इस दृष्टि से सांख्यिकीय पद्धति से अधिक श्रेष्ठ होता है।

(2) तुलनात्मक व्याख्या के प्रयोग द्वारा जो व्याख्याएँ प्रस्तुत की जाती हैं उनमें विशेष घटना की सभी दशाओं को ध्यान में रखा जाता है। यह तो हो सकता है कि व्याख्याएँ एक या अधिक विचलित मामलों की अनुपम विशेषताओं की वर्णनात्मक व्याख्याएँ हों, फिर भी कम से कम तुलनात्मक व्याख्या उन अनियमितताओं पर प्रकाश डालता है जिनको अनुसन्धानकर्ता व्याख्या के समय ध्यान में रखता है। तुलनात्मक व्याख्या का यह लक्षण नवीन सिद्धान्तों के निर्माण तथा वर्तमान सिद्धान्तों के संश्लेषण में सहायक होता है।

(3) तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में समाजों की तुलना हेतु उनके किसी प्रकार के निदर्शन की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि इसमें सांख्यिकीय महत्त्व के परीक्षण असंगत होते हैं। इस व्याख्या में तुलनात्मक परीक्षण की सीमाएँ स्वयं अनुसन्धानकर्ता निर्धारित करता है।

(4) तुलनात्मक व्याख्या अनुसन्धानकर्ता को अपने विश्लेषण से सम्बन्धित सभी मामलों से सुपरिचित होने हेतु विवश कर देता है। विस्तृत तुलना करने हेतु अनुसन्धानकर्ता के लिए प्रत्येक मामले को न केवल प्रत्यक्ष रूप में अपितु अन्य सम्बन्धित मामलों की तुलना में विश्लेषित करना आवश्यक होता है। इसके विपरीत, सांख्यिकीय पद्धति में अनुसन्धानकर्ता का केन्द्र-बिन्दु विभिन्न चरों में पाई जाने वाली समानताओं एवं भिन्नताओं के स्थान पर केवल उनमें पाया जाने वाला सम्बन्ध ज्ञात करना होता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक व्याख्या सांख्यिकीय पद्धति का दोगला चचेरा/फुफेरा/ममेरा/मौसेरा भाई/बहन नहीं है। यह सांख्यिकीय पद्धति से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है तथा तुलना करने वाले विद्वानों द्वारा जो प्रश्न उठाए जाते हैं उनका उत्तर खोजने में प्रासंगिक एवं लाभदायक है। ●